विद्या ददाति विनयम्

संजीव®

सरसा पाठशाला

RPSC अजमेर द्वारा आयोजित स्कूल व्याख्याता भर्ती परीक्षा के लिए

सारिका

गद्य-पद्य रचनाएँ

हिन्दी

दिनांक 19 सितम्बर 2025 को जारी नवीनतम सिलेबस पर आधारित

मुख्य आकर्षण

- सम्पूर्ण पाठ्य-सामग्री
- महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न
- महत्त्वपूर्ण बिंदु एवं सारांश

प्रथम श्रेणी

शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु

स्नातकोत्तर स्तर निर्धारित पाठ

कबीर ग्रंथावली, जायसी ग्रंथावली, बालकाण्ड, भ्रमरगीतसार, बिहारी रत्नाकर, घनानंद कवित्त, साकेत का नवम् सर्ग, राम की शक्तिपूजा, आपका बंटी, कफ़न कहानी, पुरस्कार कहानी, ग्रैंग्रीन कहानी, गदल कहानी, चंद्रगुप्त नाटक।

लेखक

कैलाश नागौरी

(सरसा पाठशाला ऐप)

वॉट्सऐप- 9660669988

संपादक

डॉ. दीपेश कुमार सैनी

संजीव प्रकाशन, जयपुर

- **प्रकाशक :**
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
  जयपुर-03
  website : www.sanjivprakashan.com

- **© किरण** (सरसा पब्लिकेशन)

- **संस्करण**- 2026
- **मूल्य :** 540.00
- **लेजर कम्पोजिंग :**
  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर
- **मुद्रक :** पंजाबी प्रेस, जयपुर

- ❑ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं-
  Email : sanjeevcompetition@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग, संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- ❑ इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीक या तरीके-इलेक्ट्रोनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है।
- ❑ हमने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता या त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- ❑ सभी प्रकार के प्रतिवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

अनुक्रमणिका

क्र.स.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	कबीर ग्रंथावली- प्रथम 5 अंग, 10 पद (संपादक-श्यामसुंदर दास)	05
2.	जायसी ग्रंथावली- नागमती वियोग खंड (संपादक-आचार्य रामचंद्र शुक्ल)	48
3.	रामचरितमानस-बालकाण्ड (तुलसीदास)	68
4.	भ्रमरगीतसार-प्रथम 20 पद (संपादक-आचार्य रामचंद्र शुक्ल)	190
5.	बिहारी रत्नाकर- प्रथम 25 दोहे (संपादक-जगन्नाथदास रत्नाकर)	206
6.	घनानंद कवित्त- प्रथम 10 छंद (संपादक-आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)	216
7.	साकेत - नवम् सर्ग (मैथिलीशरण गुप्त)	223
8.	राम की शक्तिपूजा- संपूर्ण (सूर्यकांत त्रिपाठी निराला)	279
9.	आपका बंटी- उपन्यास (मन्नू भंडारी)	299
10.	कफ़न - कहानी (प्रेमचंद)	312
11.	पुरस्कार - कहानी (जयशंकर प्रसाद)	321
12.	गैंग्रीन/रोज - कहानी (अज्ञेय)	331
13.	गदल - कहानी (रांगेय राघव)	337
14.	चंद्रगुप्त - नाटक (जयशंकर प्रसाद)	344

स्कूल व्याख्याता हिंदी के लिए संजीव व सरसा पाठशाला की अति महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

- ☞ सरसा काव्यशास्त्र
- ☞ हिंदी साहित्य का सरल एवं सुबोध इतिहास
- ☞ साहित्य मंजरी- हिंदी साहित्य एक्जाम रिव्यू
- ☞ आरपीएससी हिंदी सॉल्वड पेपर्स 2010 से 2025
- ☞ सामान्य हिंदी व्याकरण

॥ संपादकीय ॥

राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोज्य स्कूल व्याख्याता हिंदी के नवीनतम सिलेबस में स्नातकोत्तर स्तर निर्धारित पाठों के लिए यह पुस्तक आपके सामने प्रस्तुत की गई है। संपूर्ण पाठ्य-सामग्री को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है कि विद्यार्थियों के लिए कंटेंट को ग्राह्य करना अत्यंत सरल होगा और उनकी रुचि भी बराबर बनी रहेगी। हर विद्यार्थी की यह रुचि होती है कि उसे सबसे पहले लेखक का परिचय एक जगह मिले, फिर निर्धारित पाठ का सारांश, व्याख्या, और महत्वपूर्ण बिंदु दोहरान के लिए मिले तथा पाठ के अंत में अभ्यास के लिए तीव्र गति के वस्तुनिष्ठ प्रश्न मिले, इन सब रुचियों का ध्यान रखते हुए तैयारी करने वाले विद्यार्थियों हेतु यह सारिका पुस्तक तैयार की गई है। संपादन कार्य के दौरान पुस्तक के अद्‌भुत साहित्यिक तथ्यों को पढ़कर ही ज्ञात हो गया है कि यह मेहनत एक दिन की नहीं है, कई वर्षों के अथक प्रयासों से सृजित पाठ-सामग्री को विद्यार्थियों के लिए प्रस्तुत किया गया है।

डॉ. दीपेश कुमार सैनी

॥ भूमिका ॥

इस पुस्तक में राजस्थान लोक सेवा आयोग की शिक्षक भर्ती स्कूल व्याख्याता (स्कूल शिक्षा) हिंदी के नवीनतम सिलेबस पर आधारित स्नातकोत्तर स्तर के निर्धारित पाठों को पाठ्य-सामग्री के रूप में दिया गया है। सभी लेखकों का परिचय, पाठ परिचय, पाठ का सारांश, महत्वपूर्ण बिंदु एवं महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए गए हैं। परीक्षा की दृष्टि से सरसा पाठशाला की यह सारिका पुस्तक अत्यंत उपयोगी रहेगी। सरसा पाठशाला की हिंदी विशेष कार्य-शैली का पूरा प्रभाव इस पुस्तक में आपको देखने को मिलेगा। क्योंकि प्रस्तुतिकरण का तरीका सबसे अलग है। किसी भी रचना के मूल अर्थ को पूर्णतया ग्रहण करने के लिए पाठ्य-साम्रग्री का प्रस्तुतिकरण इस प्रकार होना जरूरी होता है कि संपूर्ण सामग्री का माईंड-मैपिंग (ग्राह्य-सामग्री) बन जाए।

इस पुस्तक की शैली यह है कि सबसे पहले परीक्षा की दृष्टि से लेखक का पूरा परिचय दिया गया है। इसके बाद जो सिलेबस में रचना है, उस रचना का पूरा परिचय है। फिर रचना का सार है, जिससे कम उद्‌बोधन में पूरी कथा समझ में आ जाए। फिर रचना का सारांश इस प्रकार दिया है कि मूल रचना पढ़ने के बाद सारांश पढ़ना ही पर्याप्त रहेगा। परीक्षा के स्तर के अनुसार इसमें मौलिक एवं परीक्षाओं में आए हुए प्रश्नों को संकलन किया है। वस्तुनिष्ठ प्रश्न पर्याप्त मात्रा में दिए गए हैं एवं सभी स्तर के प्रश्न शामिल किए गए हैं।

प्रमोद चारण (हिंदी साहित्य मंच)

॥ निवेदन ॥

सभी विद्यार्थियों को बेहतरीन तैयारी के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ! आपकी तैयारी निश्चित रूप से सोना है, यह पुस्तक आपके तैयारी में सुगंध ला देगी, जिसकी महक से आपका भविष्य सँवर जायेगा। ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है। पुस्तक के लेखन के बाद डॉ. दीपेश कुमार सैनी के अथक प्रयासों से प्रूफ रीडिंग एवं पाठ्य-सामग्री का संपादन कार्य हुआ है, जिससे प्रस्तुतिकरण का तरीका और भी रोचक हो गया है।

टाईपिंग एवं प्रूफ रीडिंग में पूर्णतया सावधानी बरती गई है। कहीं भी त्रुटि की संभावना लगभग नगण्य हैं, फिर भी मानवीय स्वभाववश यदि कहीं त्रुटि हो गई है तो आप इसे अनदेखा नहीं करें, हमें वाट्सऐप 9660669988 पर बताएँ, हम इसमें सुधार करेंगे। साथ ही विद्यार्थियों के सहयोग के लिए हम सदैव तत्पर हैं। यदि आपको इस पुस्तक के किसी तथ्य में शंका हो अथवा समझ से परे हो तो आप हमें वाट्सऐप पर चर्चा कर सकते हैं, तथ्यों को सरलता से समझने के लिए आप लेखक से सीधा संचार कर सकते हैं। हमारा आपसे अनुरोध रहेगा कि इस पुस्तक में और किसी प्रकार रोचक बना सकते हैं, हमें सुझाव जरूर दीजियेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं आपके बेहतरीन सुझावों से वंचित नहीं रहूँगा।

धन्यवाद!

कैलाश नागौरी (सरसा पाठशाला)

1. कबीर ग्रंथावली-प्रथम 5 अंग, 10 पद

(संपादक-श्यामसुंदर दास)

- कबीर का जन्म **काशी** (वर्तमान नाम-वाराणसी) में सन् 1398 में हुआ था। तथा मृत्यु **मगहर** में सन् 1518 में हुई।
- कबीर के जीवन के बारे में अनेक किंवदंतियाँ हैं। उनके माता-पिता व जाति को लेकर अनेक किंवदंतियाँ है, लेकिन यह तय है कि कबीर जुलाहा थे। क्योंकि उन्होंने अपनी विभिन्न कविताओं में स्वयं को **काशी का जुलाहा** कहा है।
- कबीर के विधिवत् साक्षर होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। **मसि कागद छुयो नहिं, कलम गहि नहिं हाथ** जैसी कबीर की पंक्तियाँ भी इसका प्रमाण देती हैं। उन्होंने देशाटन और सत्संग से ज्ञान प्राप्त किया था। किताबी ज्ञान के स्थान पर आँखों देखे सत्य और अनुभव को प्रमुखता दी है।
- कहा जाता है कि कबीर का जन्म किसी विधवा ब्राह्मण कन्या से हुआ, लोकोपवाद के भय से ब्राह्मणी ने उनको **लहरतारा ताल** में फेंक दिया था। यह बालक **नीरु** और **नीमा** नामक जुलाहे दम्पती को मिला। इसी जुलाहे दम्पती ने इस बालक का लालन-पालन किया। आगे चलकर यही बालक कबीर के रूप में प्रसिद्ध हुआ।
- कबीर की जाति के संबंध में हजारीप्रसाद द्विवेदी अपनी पुस्तक "**कबीर**" में प्राचीन उल्लेखों, कबीर की रचनाओं, प्रथाओं, वयनजीवी (बुनकर) जातियों की रीति-रिवाजों का विवेचन-विश्लेषण करके दिखाया है कि आज की वयनजीवी जातियों में से अधिकांश किसी समय ब्राह्मण श्रेष्ठता को स्वीकार नहीं करती थीं। जोगी नामक आश्रम-भ्रष्ट, घर-बारियों की एक जाति सारे उत्तर और पूर्व भारत में फैली थी। ये नाथपंथी थे, कपड़ा बुनकर और सूत कातकर या गोरखनाथ और भरथरी के नाम पर भीख माँगकर जीविका चलाया करते थे। मुसलमानों के आने के बाद ये लोग धीरे-धीरे मुसलमान होते रहे। कबीरदास जी इन्हीं नवधर्मांरित जातियों में पालित हुए थे।
- कबीर की पत्नी का नाम **लोई** व पुत्र का नाम **कमाल** व पुत्री का नाम **कमाली** था।
- एक बार कबीरदास जी **पंचगंगा घाट** पर थे, वहाँ पर स्वामी रामानन्द जी स्नान के लिए आए, तब रामानन्द जी का पैर कबीरदास जी पर पड़ गया। रामानन्द जी ने कहा- **राम राम कह**। कबीरदास जी इन शब्दों को गुरु मंत्र मानकर राम की उपासना करने लगे और रामानन्द को अपना गुरु मान लिया।
- कबीर भक्तिकाल की **ज्ञानाश्रयी काव्यधारा** (निर्गुण काव्यधारा) के प्रतिनिधि कवि हैं। कबीर रामानंद के शिष्य थे, किंतु कबीर के राम, रामानंद के राम से भिन्न है। इसलिए ही कबीर के संप्रदाय का स्पष्ट पता नहीं चलता।
- कबीर की रचनाओं में नाथों, सिद्धों और सूफ़ी संतों की बातों का प्रभाव मिलता है। वे कर्मकांड और वेद-विचार के विरोधी थे तथा जाति-भेद, वर्ण-भेद और संप्रदाय-भेद के स्थान पर प्रेम, सद्भाव और समानता का समर्थन करते थे।
- कबीर तथा अन्य निर्गुण संतों की उलटबाँसियाँ प्रसिद्ध है। उलटबाँसियाँ का पूर्व रूप हमें सिद्धों की "**संधा भाषा**" में मिलता है। उलटबाँसियाँ साधनात्मक अनुभूतियों को असामान्य प्रतीकों में प्रकट करती है। वे वर्णाश्रम व्यवस्था को माननेवाले संस्कारों को धक्का देती है। इन प्रतीकों का अर्थ खुलने पर ही उलटबाँसियाँ समझ आती है।
- कबीर अपनी बात को साफ़ और दो टूक शब्दों में प्रभावी ढंग से कह देने के हिमायती थे- बने पड़े तो सीधे-सीधे नहीं तो दरेरा देकर। आ. रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार कबीर की भाषा **सधुक्कड़ी** अर्थात् राजस्थानी व पंजाबी मिली हुई **खड़ी बोली** है। कबीर के शब्द चयन व उनके सुष्ठु प्रयोग के कारण हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को "**वाणी का डिक्टेटर (तानाशाह)** कहा है।
- कबीर के राम निराकार हैं, फिर भी कबीर ने राम को मानवीय संबंधों में याद किया है।
- **कबीर की भाषा के संबंध में विभिन्न मत-**

सधुक्कड़ी भाषा	-	आ. रामचन्द्र शुक्ल व गोविन्द त्रिगुणायत
पंचमेल खिचड़ी	-	श्यामसुन्दर दास
वाणी का डिक्टेटर	-	हजारीप्रसाद द्विवेदी
संत भाषा	-	डॉ. बच्चनसिंह
ब्रजभाषा	-	सुनिति कुमार
अवधि भाषा	-	बाबू राम सक्सेना
बनारस की भाषा	-	उदय नारायण तिवारी

कहते हैं कि सिकन्दर लोदी ने कबीर पर अत्याचार किया था।

- कबीर के साहित्य को प्रकाश में लाने का श्रेय **एच. एच. विल्सन** को है। **सन् 1903** में एच. एच. विल्सन ने कबीर के ग्रंथों की खोजकर उनकी संख्या **आठ** बताई- 1. आनंद सम सागर 2. बलज की रमैनी 3. चांचरा 4. हिण्डोला 5. झूलना 6. कबीर पंथी 7. कहरा 8. शब्दावली।
- मिश्रबंधुओं ने मिश्रबंधु विनोद ग्रंथ में कबीर की कुल 84 रचनाएँ बताई हैं और रामकुमार वर्मा ने कबीरदास जी के कुल 85 ग्रंथों की चर्चा की है। इसी प्रकार काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने कबीर के कुल 61 ग्रंथों की सूची बनाई है।
- **हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने कबीर को भगवान विष्णु के **नृसिंहावतार की प्रतिमूर्ति** माना है।
- कबीर तथा अन्य निर्गुण संतों की उलटबाँसियाँ प्रसिद्ध है। उलटबाँसियाँ का पूर्व रूप हमें सिद्धों की "संधा भाषा" में मिलता है। उलटबाँसियाँ अंतस्साधनात्मक अनुभूतियों को असामान्य प्रतीकों में प्रकट करती हैं। वे वर्णाश्रम व्यवस्था को माननेवाले संस्कारों को धक्का देती है। इन प्रतीकों का अर्थ खुलने पर ही उलटबाँसियाँ समझ आती है।
- कबीर अपनी बात को साफ़ और दो टूक शब्दों में प्रभावी ढंग से कह देने के हिमायती थे- बने पड़े तो सीधे-सीधे नहीं तो दरेरा देकर। आ. रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार कबीर की भाषा **सधुक्कड़ी** अर्थात् राजस्थानी

व पंजाबी मिली हुई **खड़ी** बोली है। कबीर के शब्द चयन व उनके सुष्ठु प्रयोग के कारण हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को **''वाणी का डिक्टेटर (तानाशाह)''** कहा है।

- **डॉ. नगेन्द्र के अनुसार कबीर की रचनाएँ-**
  1. अगाध मंगल 2. अनुराग सार 3. बानी 4. साखी 5. रेख्ता 6. मुहम्मदबोध 7. विवेक सागर 8. ज्ञान सागर
- कबीर के शिष्य धर्मदास ने कबीर की रचनाओं का संकलन **'बीजक'** नाम से किया। बीजक के **तीन भाग** है- 1. रमैनी 2. सबद 3. साखी
- साखी भाग में दोहों का संकलन किया है। इसमें 59 अंग है। प्रथम अंग **'गुरदेव कौ अंग'** है और अंतिम अंग **'अबिहड़ कौ अंग'** है। साखी शब्द साक्षी का तद्भव रूप है। साक्षी का अर्थ होता है- गवाह। संत कबीर ने अपने आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर बताई गई ज्ञान की बात का स्वयं को साक्षी माना है। इसलिए इस संकलन में संकलित दोहों को साखी कहा गया है। साखी का दूसरा अर्थ सीख भी लिया जाता है।
- **सबद भाग** में कबीर के पदों का संकलन है। **रमैनी** भाग में कबीर के पदों व चौपाइयों का संकलन है। इसी प्रकार साखी दोहों में हैं। रमैनी और सबद ब्रजभाषा में है जो उस समय मध्यदेश की काव्य-भाषा थी।
- **कबीरदास जी के जीवन के बारे में जानकारी देने वाले प्रमुख ग्रंथ-**

कबीर परिचई	-	अनंतदास
बीजक	-	धर्मदास
कबीर ग्रंथावली	-	श्यामसुंदर दास
कबीर साहब	-	डॉ. भगवतस्वरूप मिश्र
कबीर साहब का बीजक	-	महाराज विश्वनाथ
संत कबीर	-	डॉ. रामकुमार वर्मा
कबीर कसौटी	-	लहनासिंह
साखी	-	विजयदेव नारायण साही
कबीर	-	हजारीप्रसाद द्विवेदी

- कबीर के काव्य का संकलन श्यामसुन्दरदास ने **'कबीर ग्रंथावली'** नाम से और अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध ने **'कबीर वचनावली'** नाम से किया।
- कबीर की मृत्यु 1518 ई. में मगहर (जिला-बस्ती) में हुई थी। जब कबीर की मृत्यु हुई थी तो हिंदू और मुसलमानों में विवाद हो गया। हिंदू शव को जलाना चाहते थे और मुसलमान दफनाना चाहते थे। लेकिन बाद में पाया गया कि कबीर का शव अंतर्धान हो गया और शव की जगह फूल आ गए हैं। उन फूलों में से कुछ फूलों को मुसलमानों ने दफना दिया और कुछ फूलों को हिंदुओं ने जला दिया।

✍ **प्रसिद्ध पंक्तियाँ-**

- ''भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाए रामानन्द।
  परकट किया कबीर ने, सात दीप नौ खंड।।''
- ''काहै री नलिनी तू कुम्हलानी।''
- ''ढ़ाई आखर प्रेम के, पढ़े सो पंडित होय।''
- ''नैया बिच नदिया डूबती जाय।''
- ''माया महाठगिनी हम जानि।''
- ''चलती चाकी देखकर दिया कबीरा रोय।
  दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।''
- ''निरगुण राम निरगुण राम जपो रे भाई,
  अविगत की गति लखि न जाई।''

✍ **प्रसिद्ध कथन-**

- ''इसमें कोई सन्देह नहीं है कि ठीक मौके पर जनता के उस बड़े भाग को संभाला, जो नाथ-पंथियों के प्रभाव और भक्ति रस से शून्य पड़ता जा रहा था।''- (आ. शुक्ल)
- ''संत कवियों में कबीर के बाद के कवि वैसे ही दिखाई पड़ते हैं जैसे चन्द्रोदय के बाद नक्षत्रमालाएँ।'' - (डॉ. बच्चनसिंह)
- ''साहित्य जगत् में कबीर जैसा अक्खड़ और निराला जैसा धाखड़ कोई और कवि नहीं हुआ।'' -(हजारीप्रसाद द्विवेदी)
- ''भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था, भाषा उनके सामने नृत्य करती थी, थिरकती थी, वे तो वाणी के डिक्टेटर थे। ''
  -(हजारीप्रसाद द्विवेदी)
- ''कबीर तो उजाड़ का फूल है जो किसी माली की देखरेख में विकसित नहीं हुआ, लू व बारिश के थपेड़े उसके साथ संघात करते रहे पर उसकी गंध कभी मंद नहीं पड़ी।''- (हजारीप्रसाद द्विवेदी)

·····••◉● कबीर की काव्यगत विशेषताएँ ●◉••·····

कबीरदास जी ने विधिवत् शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। उन्होंने भाव-विभोर होकर जो भी कहा था, वह काव्य बन गया था। उनके काव्य में काव्यगत् विशेषताएँ स्वत: आई है। काव्य की मधुरता ने काव्यांगों का स्वत: प्रतिपालन हुआ है। यहाँ हम कबीरदास जी की काव्य विशेषताओं का संक्षेप में अध्ययन करेंगे-

(1) वर्ण्य विषय-

कबीर भ्रमणशील थे और अपने अनुभव से जो भी ज्ञान प्राप्त किया था, उसी सत्यता को काव्य में प्रकट किया है। कबीर ने जीवन के हर एक पहलू को निकटता से देखा था। उन्होंने कागज लिखी बातें नहीं कही हैं, जो भी बातें कही हैं, आँखों देखी कही हैं। यही वजह है कि उनके दोहों का साखी कहा जाता है। अपनी बातों के साक्षी कबीर स्वयं हैं। कबीर ने सामाजिक-सांस्कृतिक-धार्मिक आदि विविध पक्षों का चित्रण किया है। अपने काव्य में ब्रह्म, ज्ञान, भक्ति, दर्शन, गुरु-महिमा, जीव, माया, उपदेश, आचरण, मोह आदि का चित्रण किया है। डॉ. सतनामसिंह शर्मा ने **कबीर एक विवेचन** में लिखा है कि ''गहन सत्यों को, जिस रूप में भी संभव हुआ, उन्होंने प्रकट कर दिया। अभिव्यक्ति के लिए न तो उन्हें काव्यशास्त्र की आवश्यकता हुई और न ही काव्य-रीति के पालन की। जो सहज में बन सका, उन्हीं को उन्होंने अपनाया है।'' इस प्रकार कबीर का काव्य सहज अभिव्यक्ति है। **परशुराम चतुर्वेदी** ने लिखा है कि ''कबीर-साहित्य उन रंग-बिरंगे फूलों में नहीं है जो सजे-सजाये उद्यानों की

क्यारियों में किसी क्रमविशेष के अनुसार उगाए जाते हैं और जिनकी छटा और सौंदर्य का अधिकांश मालियों के कला-नैपुण्य पर आश्रित रहा करता है। यह तो एक वन्य कुसुम है जो अपने स्थल पर अपने आप उगा है और जिसका विकास केवल प्राकृतिक नियमों पर ही निर्भर करता है।

(2) रस योजना-

कबीरदास जी एक संत महात्मा थे। उनके काव्य में अधिकतर शांत रस का ही निरूपण हुआ है। उनकी भक्तिपरक सभी साखियाँ और रमैनी में शांत रस ही प्रमुख रूप से है। शांत रस के अलावा अन्य रसों में कबीर का प्रिय रस शृंगार रस और अद्‌भुत रस है। दांपत्यमूलक उक्तियों में कबीर ने शृंगार रस में आत्मा-परमात्मा का चित्रण किया है। कबीर ने स्वयं को पत्नी और परमात्मा को पति रूप में मानकर शृंगार रस की रसमयी धारा बहाई है। **'दुलहिनी गावौ मंगलाचार, हम घरि आयो हो राजा राम भरतार'** कहकर कबीर ने शृंगार रस का सुंदर चित्रण किया है। इसके अतिरिक्त अद्‌भुत रस का चित्रण उलटबाँसियों में हुआ है। इसके साथ ही हास्य रस का भी सुंदर चित्रण मिल जाता है।

कहीं-कहीं उपदेशात्मक पदों में काव्य नीरस भी हो गया है। **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने **कबीर ग्रंथ** में लिखा है कि ''कबीर ने काव्य लिखने की कहीं प्रतिज्ञा नहीं की, तथापि उनकी आध्यात्मिक गगरी से छलकते हुए रस से काव्य की कटोरी में भी कम रस इकट्ठा नहीं हुआ है। फलत: काव्यत्व, रसत्व उनके पदों में फोकट का माल है, बाई प्रोडक्ट है। वह कोलतार और सीरे की भाँति और चीजों को बनाते बनाते अपने आप बन गया है।''

(3) व्यंग्य-शैली-

कबीर ने अपनी व्यंग्य-शैली से जाति-पाँति, पूजा-पाठ, जप-तप, तीर्थाटन, मंदिर-मस्जिद, पंडित-शेख, मुल्ला-शाक्त आदि विभिन्न विषयों पर करारा व्यंग्य किया है। उनके वैयक्तिक जीवन के अनुभवों, फक्कड़-जीवन, धार्मिक व सामाजिक परिस्थितियों ने कबीर को कटु व्यंग्यकार बना दिया है। **हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने लिखा है कि ''सच्च पूछा जाए तो हिंदी में आज तक ऐसा जबरदस्त व्यंग्य लेखक पैदा ही नहीं हुआ। उनकी साफ चोट करने वाली भाषा, बिना कहे भी सब कुछ कह देने वाली शैली और अत्यंत सादी किंतु अत्यंत तेज प्रकाशन-भंगी अनन्य साधारण है। पढ़ने से ही साफ मालूम होता है कि कहने वाला अपनी तरफ से एकदम निश्चिंत हैं। यदि वे अपनी ओर से निश्चिंत नहीं होता तो ऐसा करारा व्यंग्य नहीं करता।''

(4) भाषा-

कबीर की भाषा के संबंध में विद्वानों में मतभेद हैं, लेकिन कबीर की रचना को पढ़ने से यह स्पष्ट है कि कबीर ने लोकभाषा का प्रयोग किया है। स्वयं कबीर ने अपनी भाषा को पूरबी कहा है, जिसमें बनारस, मिर्जापुर, गोरखपुर आदि क्षेत्रों में प्रचलित शब्दावली का प्रधान रूप से प्रयोग हुआ है। कबीर के तीर्थाटन, विविध भाषी शिष्यों एवं विस्तृत दृष्टिकोण के कारण कबीर की भाषा में अनेक भाषाओं के शब्द मिलते हैं। इस प्रकार कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है जिसमें खड़ी बोली, राजस्थानी, अरबी, फारसी आदि भाषाओं के शब्द स्वत: आ गए हैं। पारसनाथ तिवारी ने **कबीरवाणी** में लिखा है कि ''कबीर की भाषा को देखकर उस ग्रामीण नायिका का स्मरण हो जाता है जो निहायत ही सादगी और आत्मविश्वास के साथ कहती है- गाँव में पैदा हुई, गाँव में ही रहती हूँ। जानती भी नहीं कि नगर कहाँ होता है। इतना अवश्य है कि नागरिकाओं के पति आकर यहाँ की खाक छान जाया करते हैं। वैसे कहने को जो भी हूँ, सो हूँ।''

हजारीप्रसाद द्विवेदी ने **कबीर ग्रंथ** में लिखा है कि भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा, उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा दिया- बन गया तो सीधे-सीधे, नहीं तो दरेरा देकर। भाषा कबीर के सामने कुछ लाचार-सी नजर आती है। उसमें मानो हिम्मत ही नहीं है कि इस लापरवाह फक्कड़ की किसी फरमाइश को ना कर सके और अकथनीय कहानी का रूप देकर मनोग्राही बना देने की जैसी ताकत कबीर की भाषा में है, वैसी बहुत कम लेखकों में पायी जाती है।''

(5) छंद-अलंकार

कबीर ने सधुक्कड़ी छंदों का ही प्रयोग किया है, जिसमें साखी, सबद और रमैनी प्रमुख हैं। कबीर ने पदों में बसंत, बेलि, चाँचर, कहरवा, चौंतीसी, हिंडोला आदि छंदों का प्रयोग किया है। कबीर ने छंदों की काव्यशास्त्रीय नियमावली का ध्यान नहीं रखा है, पर गायन शैली का अवश्य ही ध्यान रखा है। कबीर ने काव्य में अधिकतर रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति, दृष्टांत आदि अलंकारों का प्रयोग किया है।

(6) काव्य-रूप

कबीर के काव्य के तीन रूप है- साखी, सबद और रमैनी। साखी में दोहों का संकलन हैं, सबद में गेय-पदों का संकलन हैं और रमैनी में चौपाइयों का संकलन हैं। रमैनी में अनेक प्रकार की शैलियाँ संकलित हैं, जैसे- सतपदी, अष्टपदी, उलटबाँसियाँ, प्रतीक, अन्योक्ति आदि।

(7) कबीर के पदों में प्रतीकों का प्रयोग-

प्रतीक के माध्यम से अप्रस्तुत को प्रस्तुत बनाकर काव्य में वर्णन किया जाता है। कबीर का काव्य सिद्धों एवं नाथों की उलटबाँसी शैली एवं हठयोग साधना से प्रभावित है। सिद्धों एवं नाथों ने भी प्रतीकों का प्रयोग किया है। कबीर के काव्य में प्रयुक्त प्रमुख शब्द प्रतीक के रूप में इस प्रकार आए हैं-(1) गंगा = इड़ा नाड़ी (2) जमुना = पिंगला नाड़ी (3) सरस्वती = सुषुम्ना नाड़ी (4) प्रियतम = परमात्मा (5) विरहिणी = जीवात्मा (6) ससुराल = परलोक (7) देवर = संशय (8) ससुर = मोह एवं अज्ञान (9) ननद = माया (10) ऊँची अटारी = कठिन साधना (11) चूनर = शरीर (12) नैहर = संसार (13) धोबी = गुरु (14) रंगरेज = परमात्मा (15) मदिरा = ईश्वरीय प्रेम

(8) काव्य में सात चक्र-

(1) मूलाधार चक्र = चार पंखुड़ियाँ
(2) स्वाधिष्ठान चक्र = 6 दल
(3) मणिपूरक चक्र = 8 दल
(4) अनाहद चक्र = 12 दल
(5) विशुद्धि चक्र = 16 दल (विशुदाख्य चक्र)
(6) आज्ञा चक्र = 2 दल (आशा चक्र)
(7) सहस्रार चक्र।

कबीर ग्रंथावली (संपादक- श्याम सुंदर दास)

कबीर ग्रंथावली में महाकवि संत कबीरदास जी काव्य सर्जना का समेकित प्रकाशन है। संत कबीरदास जी ने अनेक दोहों व पदों की रचना की है। कबीर की समस्त रचना का यह संग्रह श्यामसुंदर दास ने तैयार किया है। इस ग्रंथ को तीन भागों में बांटा गया है- **साखी, पद व रमैनी**। साखी को **59 अंगों** में विभक्त किया गया है। साखी का प्रथम अंग **गुरदेव कौ अंग** है और अंतिम अंग **अबिहड़ कौ अंग** है। इस प्रकार इस ग्रंथ में कुल **16 पद** हैं। प्रथम पद राग गौड़ी में है और अंतिम पद राग धनाश्री में है। फर्स्ट ग्रेड हिंदी के नवीनतम सिलेबस में गुरदेव कौ अंग और प्रथम पाँच पद लिए गए हैं।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा में रक्षित हस्तलिखित पुस्तकों की जब जाँच की गई तो कबीरदास जी के बारे में दो पुस्तकें ऐसी मिली जिसके बारे में किसी को जानकारी नहीं थी। एक पुस्तक सन् 1504 में लिखी गई थी और दूसरी 1824 ई. में लिखी गई थी। दोनों प्रतियों में पाठ-भेद बहुत ही कम था। बाद में लिखी गई पुस्तक में पहले लिखी गई पुस्तक से 131 दोहे और 5 पद अधिक थे। काशी नागरी प्रचारिणी सभा में योजना बनी थी कि इन पुस्तकों के आधार पर कबीरदास जी का एक ग्रंथ प्रकाशित किया जाए। सबसे पहले यह काम अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध को सौंपा गया, पर वे समयाभाव के कारण इस काम पूरा नहीं कर सके। फिर यह काम श्यामसुंदर दास को सौंपा गया। जिन्होंने दो वर्ष के समय में इस पुस्तक का काम पूरा किया। आज यह पुस्तक कबीर की रचनाओं के लिए प्रामाणिक पुस्तक है।

कबीर ग्रंथावली

(1) साखी-

(1) गुरदेव कौ अंग	(2) सुमिरण कौ अंग	(3) बिरह कौ अंग	(4) ग्यान बिरह कौ अंग
(5) परचा कौ अंग	(6) रस कौ अंग	(7) लांबि कौ अंग	(8) जर्णा कौ अंग
(9) हैरान कौ अंग	(10) लै कौ अंग	(11) निहकर्मी पतिब्रता कौ अंग	(12) चितावणी कौ अंग
(13) मन कौ अंग	(14) सूषिम मारग कौ अंग	(15) सूषिम जनम कौ अंग	(16) माया कौ अंग
(17) चाँणक कौ अंग	(18) करणी बिना कथणी कौ अंग	(19) कथणी बिना करणी कौ अंग	(20) कामी नर कौ अंग
(21) सहज कौ अंग	(22) साँच कौ अंग	(23) भ्रम विधौंसण कौ अंग	(24) भेष कौ अंग
(25) कुसंगति कौ अंग	(26) संगति कौ अंग	(27) असाध कौ अंग	(28) साध कौ अंग
(29) साध साषीभूत कौ अंग	(30) साथ महिमां कौ अंग	(31) मधि कौ अंग	(32) सारग्राही कौ अंग
(33) बिचार कौ अंग	(34) उपदेस कौ अंग	(35) बेसास कौ अंग	(36) पीव पिछांणन कौ अंग
(37) बिर्कलाई कौ अंग	(38) सम्रथाई कौ अंग	(39) कुसबद कौ अंग	(40) सबद कौ अंग
(41) जीवन मृतक कौ अंग	(42) चित कपटी कौ अंग	(43) गुरसिष हेरा कौ अंग	(44) हेत प्रीति सनेह कौ अंग
(45) सूरा तन कौ अंग	(46) काल कौ अंग	(47) सजीवनि कौ अंग	(48) अपारिष कौ अंग
(49) पारिष कौ अंग	(50) उपजणि कौ अंग	(51) दया निरबैरता कौ अंग	(52) सुंदरि कौ अंग
(53) कस्तूरियाँ मृग कौ अंग	(54) निंद्या कौ अंग	(55) निगुणँ कौ अंग	(56) बीनती कौ अंग
(57) साषीभूत कौ अंग	(58) बेली कौ अंग	(59) अबिहड़ कौ अंग	

(2) पद

1. (राग गौड़ी)	2. (राग रामकली)	3. (राग आसावरी)	4. (राग सोरठि)
5. (राग केदारौ)	6. (राग मारू)	7. (राग टोड़ी)	8. (राग भैरु)
9. (राग बिलावल)	10. (राग ललित)	11. (राग बसंत)	12. (राग मालीगौडी)
13. (राग कल्यान)	14. (राग सारंग)	15. (राग मलार)	16. (राग धनाश्री)

(3) रमैनी

1. (राग सूहौ)	2. (सतपदी रमैणी)	3. (बड़ी अष्टपदी रमैणी)	4. (दुपदी रमैणी)
5. (अष्टपदी रमैणी)	6. (बारहपदी रमैणी)	7. (चौपदी रमैणी)	

पंडित श्यामसुंदर दास का परिचय

पंडित श्यामसुंदर दास का जन्म 1875 ई. को काशी में हुआ। पंडित श्यामसुंदर दास ने 1897 ई. में बी.ए. करके काशी के हिंदू स्कूल में अध्यापन का काम करने लगे। बाद में लखनऊ के कालीचरण स्कूल में प्रधानाध्यापक के पद पर रहे। बाद में 1921 ई. में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए।